॥ ओ३म् ॥

ईसा मसीह

परमेश्वर का इकलौता पुत्र था ?

ईसाइयत का मुख्य आधार ईसा मसीह है। ईसा नहीं तो ईसाइयत भी नहीं। अतः बाइबिल को ईश्वरीय वचन के रूप में जांचते समय यह उचित एवं प्रासंगिक ही होगा कि ईसा मसीह से सम्बन्धित कुछ मान्यताओं एवं सन्दर्भों को भी देख लिया जाय।

ईसाईयत की मान्यताओं के अनुसार ईसा मसीह की कुछ प्रमुख विशेषताएें निम्नानुसार हैं-

१. ईसा ईश्वर के इकलौते पुत्र हैं।
२. ईसा कुंआरी माता से पैदा हुए थे।
३. ईसा के जन्म के सम्बन्ध में भविष्यवाणियां की गई थीं।

ईसाइयत और पुराना नियम/व्यवस्थान

ईसाई मत की ईसा से सम्बन्धित मान्यताओं पर विचार करने के भी पहले यह आवश्यक है कि पुराने नियम और ईसाइयत के सम्बन्धों को स्पष्ट कर दिया जाए। कारण कि ईसाई मत की समीक्षा में जब कभी पुराने नियम के उद्धरण दिये जाते हैं और जब वे ईसाईयत की आधारभूत मान्यताओं पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर देते हैं, तो ईसाई मत का तर्क हो सकता है कि ईसाइयत तो ईसा मसीह के पश्चात है और ईसा के जन्म व उपदेश आदि का वर्णन तो केवल नये नियम में ही है। अतः ईसाई मत का पुराने नियम से कोई सम्बन्ध नहीं और ईसाई जगत पुराने नियम की बातों के लिये उत्तरदायी नहीं है।

इस सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें विचारणीय हैं-

१. 'बाइबिल' पुराने नियम व नए नियम का ही संयुक्त नाम है। पुराने व नए नियम से युक्त पूरी बाइबिल ही ईसाई धर्म की धर्म पुस्तक है और सामान्य रूप से उसे ही दिया एवं प्रचारित किया जाता है। हां, यह अवश्य है कि प्रचार की सुविधा से कभी-कभी केवल नया नियम, और कभी चारों शुभ समाचार

(मेथ्यू, मार्क, ल्यूक व जॉन द्वारा लिखित ईसा की जीवनियां, जो नए नियम के प्रारम्भ में हैं, जहां लेखक के नाम पुरानी पद्धति में मत्ती, मरकुस, लूका व यूहन्ना दिये जाते हैं) और कभी-कभी तो केवल एक सुसमाचार भी 'इंजील' के नाम से वितरित किया जाता है। पर वास्तविकता में बाइबिल में पुराना व नया नियम दोनों ही समान महत्व के आधार पर सम्मिलित हैं और किसी को छोड़ा नहीं जा सकता।

२. ईसाई मत में ईसा के अतिरिक्त प्रभु परमेश्वर भी एक महत्वपूर्ण चरित्र हैं। कारण ईसा को उसी परमेश्वर का इकलौता पुत्र तो प्रचारित किया जाता है। परमेश्वर से सम्बन्धित लगभग सभी बातें, उसका स्वरूप, स्वभाव, निवास, उसके सन्देश, प्रतिज्ञाऐं, उसने क्या किया, क्यों किया व क्या करेगा आदि सभी मुख्यतः पुराने नियम में ही है।
   नये नियम में भी जब कभी परमेश्वर का सन्दर्भ आयेगा तो उसका आधार पुराना नियम ही होगा।

३. ईसा मसीह भी अपने आगमन, कार्य एवं अलौकिकता आदि को सही एवं परमेश्वर प्रेरित ठहराने के लिये पुराने नियम का ही आधार लेते हैं।

४. ईसा मसीह स्वयं ने न तो **''ईसाई मत''** के नाम से कोई नया मत चलाया और न ही उनकी ऐसी कोई इच्छा थी कि वे कोई नया मत चलाएं।
   वे स्वयं यहूदी थे और उनके समय में यहूदी मत में जो खराबियां उनके अनुसार आ गई थी, उन्हें दूर करने, या यहूदी लोग जो मार्ग से भटक गये थे, उन्हें सही मार्ग पर लाने के लिए उन्होंने प्रयास किया। उनके प्रारम्भिक उपदेश, या वार्ता तो यहूदी पूजाघरों में ही होते थे। उस समय चर्च कहीं नहीं थे सुसमाचारों से वर्णन देखिये–
   ''जब यीशु ने यरूशलम में प्रवेश किया....
   यीशु ने मन्दिर के आंगन में प्रवेश किया और वहां से क्रय-विक्रय करने वाले सब लोगों को बाहर निकाल दिया। उन्होंने मुद्रा-विनिमय करने वालों की मेजें और कबूतर बेचने वालों की गद्दियां उलट दीं; और उनसे कहा, "धर्मशास्त्र का लेख है, 'मेरा घर प्रार्थना का घर

कहलाएगा।' पर तुमने उसे 'डाकुओं का अड्डा' बना दिया है।''

मत्ती २१:१०,१२-१३

''तब यीशु और उनके शिष्य यरूशलम आए। यीशु ने मन्दिर में प्रवेश किया और वह मन्दिर में क्रय-विक्रय करने वालों को वहां से निकालने लगे। उन्होंने मुद्रा-विनिमय करने वालों की मेजें और कबूतर बेचने वालों की गद्दियां उलट दीं।''

मरकुस ११:१५

''तब यीशु ने मन्दिर में प्रवेश किया। वह बेचने वालों को मन्दिर से यह कहकर बाहर निकालने लगे, 'धर्मशास्त्र का लेख है।' 'मेरा घर प्रार्थना का घर होगा, परन्तु तुमने उसे डाकुओं का अड्डा बना रखा है।'''

लूका १९:४५

''यहूदियों का फसह-पर्व समीप आने पर यीशु यरूशलम गए। वहां उन्होंने मन्दिर में बैल, भेड़ और कबूतर बेचने वालों, और सर्राफों को बैठे हुए देखा। यीशु ने रस्सियों का कोड़ा बनाया और भेड़ों और बैलों सहित सबको मन्दिर से बाहर कर दिया। यीशु ने मुद्रा विनिमय करने वालों की मुद्राएं बिखेर दीं और गद्दियां उलट दीं। वह कबूतर बेचने वालों से बोले, 'इन्हें यहां से ले जाओ। मेरे पिता के भवन को व्यापार का घर मत बनाओ।'''

यूहन्ना २:१३-१६

''इसके बाद यीशु अपने शिष्यों के साथ यहूदा प्रदेश में आए और वहां शिष्यों के साथ रहकर बपतिस्मा देने लगे।''

यूहन्ना ३:२२

इस प्रकार चारों ही सुसमाचार-जीवनी लेखकों ने यीशु के कार्यों का केन्द्र यहूदी मन्दिरों को ही बताया है।किसी भी लेखक ने अपने सुसमाचार में यह कहीं नहीं बताया कि ईसा यहूदी मत से भिन्न अपना कोई मत अलग से चलाना चाहते थे।

ईसा के कार्य यहूदी मत के सुधार के लिये होने पर भी [redacted], तत्कालीन यहूदी धर्म गुरूओं ने उन्हें मान्यता नहीं दी और ईसा के तथाकथित वध हो जाने के पश्चात यहूदियों और ईसा के अनुयायियों में दूरियां बढ़ने लगीं और कालान्तर में ईसा के अनुयायी 'ईसाई' मत के रूप में इकट्ठे हो गये।

अतः ईसा के मत का आधार पुराने नियम की व्यवस्थायें ही होंगी। वे उन्हें नकार नहीं सकते।

५. ईसा स्वयं ने न केवल पुराने नियम को स्पष्ट रूप से मान्य किया है, वरन् यह भी दावा किया कि वे पुराने नियम की व्यवस्थाओं को पूरा करने ही आए हैं, जो अपरिवर्तनशील है। उनके शब्दों पर विचार कीजिए–

पुराना नियम और नया नियम–

> **"यह न समझो कि मैं व्यवस्था और नबियों के लेखों को लोप करने आया हूं; मैं उन्हें लोप करने नहीं, वरन् पूर्ण करने आया हूं। मैं तुमसे सच कहता हूं; जब तक आकाश और पृथ्वी न टल जाएं, व्यवस्था की एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए न टलेगा। यदि कोई मनुष्य इन छोटी-सी छोटी आज्ञाओं में से एक का भी उल्लंघन करे, और दूसरे मनुष्यों को भी यही सिखाए, तो वह परमेश्वर के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उसका पालन करे और उनको सिखाए वह परमेश्वर के राज्य में बड़ा कहलाएगा।"**

मत्ती ५:१७-१९

> **"किन्तु व्यवस्था की एक मात्रा के मिटने की अपेक्षा, आकाश और पृथ्वी का टल जाना अधिक सरल है।"**

लूका १६:१७

इस प्रकार ईसा स्वयं पुराने नियम की व्यवस्था को न केवल स्वीकार करते हैं, वरन् उसको आगे बढ़ाते हैं।

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि ईसाई मत के लिये पुराने और नए नियम का संयुक्त रूप बाइबिल ही मान्य आधार है, और पुराने नियम को वे त्याग या अमान्य नहीं कर सकते।

ईसाई त्रेतवाद–

वैदिक धर्म त्रेतवाद को मानता है कि ईश्वर, जीव व प्रकृति (पदार्थ) अनादि हैं। ये हमेशा से हैं, इन्हें किसी ने नहीं बनाया।

इसी प्रकार ईसाई मत में भी त्रेतवाद है। पर यह वैदिक त्रेतवाद से बहुत कुछ अलग है। कारण ईसाई मत अभाव से भाव की, कुछ भी नहीं से सब कुछ, की उत्पति मानते हैं, सर्वांश में नहीं वरन् कुछ अंश में। कारण कि हालांकि बाइबिल के प्रारम्भ में लिखा है। "परमेश्वर ने आरम्भ में आकाश और पृथ्वी को रचा" (उत्पति १:१) पर आगे "जल की सतह पर परमेश्वर का आत्मा मंडराता था।" (उत्पति १:२) बाइबिल में–उत्पति की पुस्तक में–जहां सृष्टि निर्माण का वर्णन है यह कहीं नहीं लिखा कि जल परमात्मा ने बनाया। जल न होता तो परमेश्वर का आत्मा कहां मंडराता? अतः जल था। और जब जल था तो प्रश्न उठता है कि जल का आधार क्या था? सामान्य उत्तर होगा कि जल का आधार पृथ्वी होगी। अतः पृथ्वी भी थी तो फिर उत्पति १.१ में परमेश्वर को पृथ्वी को रचने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

प्रसंगवश हम पाठकों की जानकारी के लिये बताना चाहेंगे कि सब ओर इतना जल था कि बाइबिल के परमेश्वर को जल के दो हिस्से करने पड़े और बीच में आकाश बनाना पड़ा, देखिये–

> **परमेश्वर ने कहा–"जल के मध्य मेहराब हो, और वह जल को जल से अलग करे। परमेश्वर ने मेहराब बनाया, तथा मेहराब के ऊपर के जल को, उसके नीचे के जल से अलग किया। ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने मेहराब को आकाश नाम दिया।"**

उत्पति १:६-७

इस प्रकार आकाश के ऊपर जल है।

हिन्दी बाइबिल में 'मेहराब' शब्द के लिये टिप्पणी में 'गुम्बज' शब्द देकर स्पष्ट किया है, "प्राचीन विश्वास के अनुसार मेहराब अपने ऊपर के जल को नीचे गिरने से रोकता था।" (हिन्दी बाइबिल पृष्ठ १) "प्राचीन विश्वास" शब्दों के द्वारा आकाश के ऊपर जल की स्थिति से बचने का प्रयास किया गया है। जबकि बाइबिल स्वयं स्पष्ट रूप से मेहराब-आकाश के ऊपर जल बताती है।

क्योंकि ईसाई मान्यता के अनुसार पृथ्वी चपटी है। आकाश उसके

ऊपर उलटे कटोरे की भांति, एक ठोस वस्तु है, जिसमें खिड़कियां जैसी है, जिनमें से परमेश्वर पृथ्वी पर जल भेजता है।

उदाहरण प्रस्तुत है–

''जिस वर्ष नूह छः सौ वर्ष का हुआ, उसके दूसरे महीने के सत्रहवें दिन महासागर के झरने फूट पड़े, आकाश के झरोखे खुल गए।''

उत्पति ७:११

आकाश परमात्मा का निवास स्थान भी माना जाता है।

''किन्तु मैं तुमसे कहता हूं; शपथ कभी न खाना–न स्वर्ग की; क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है।''

मत्ती ५:३४

पुराने नियम के पहले की मान्यताओं के अनुसार अनेकों आसमानों की कल्पना की गई थी, विशेषतः सात आसमानों की मान्यता थी।[१] तीसरा आसमान/स्वर्ग तो बाइबिल में है।

''मैं मसीह में एक व्यक्ति को जानता हूं, जो चौदह वर्ष हुए तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया–सदेह या विदेह। यह परमेश्वर जाने, मैं नहीं जानता।''

२ कुरिंथियों १२:२

पर ईसाइयत के त्रेत में जल नहीं। वहां अलग ही तीन सत्ताऐं हैं। वहां यद्यपि ईश्वरीय सत्ता एक है, पर सम्भवतः वह तीन रूपों में है।

त्रेत के लिये सामान्यतः जो उदाहरण दिया जाता है निम्नानुसार है–

''यीशु वपतिस्मा लेकर तुरन्त जल से निकले तो उनके लिए स्वर्ग खुल गया; और उन्होंने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते हुए देखा। तब स्वर्ग से यह आवाज सुनाई दी : 'यह मेरा पुत्र, मेरा प्रिय है, जिसे मैंने पसन्द किया है।'''

मत्ती ३:१६-१७

यहां विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि स्वर्ग, जहां बाइबिल का परमेश्वर रहता है, वहां खुलने-बन्द होने जैसी कोई चीज है उसे

उत्पति ७:११ में झरोखे कहा गया है। उसमें से ईश्वर का आत्मा कबूतर के समान उतरता है। अर्थात् परमेश्वर ऊपर ही रहता है और अपनी आत्मा को कबूतर के रूप में भेजता है। बिलकुल बच्चों की कहानियों जैसी स्थिति है जहां जादूगर अपनी आत्मा एक तोते में रखता है। या मगर बन्दर को उसका कलेजा खाने के लालच में फुसलाकर अपने ऊपर बिठाकर नदी में ले जाता है और वहां मगर की चाल मालूम पड़ने पर बन्दर कहता है कि इधर-उधर जाते समय वह अपना कलेजा तो पेड़ पर छोड़ कर आता है। बाइबिल में परमात्मा स्वर्ग में रहकर अपनी आत्मा कबूतर के रूप में नीचे पृथ्वी पर भेजता है। अतः पवित्र आत्मा का स्वतन्त्र अस्तित्व होगा। परमात्मा की आत्मा कबूतर के रूप में नीचे पृथ्वी पर आने पर परमात्मा की स्थिति क्या होगी? यदि वह आत्मा के बिना जीवित रहता है तो आत्मा की आवश्यकता क्या?

उपरोक्त उद्धरण में तीन सत्ताऐं हैं—परमेश्वर, उसका आत्मा और उसका प्रिय पुत्र।

एक अन्य स्थान पर भी तीन सत्ताऐं बताई गई हैं, जहां स्थिति कुछ विशेष स्पष्ट है।

"क्योंकि इस प्रकार तीन हैं, जो स्वर्ग में साक्षी देते हैं—पिता, शब्द और पवित्र आत्मा और ये तीनों एक हैं "और तीन हैं जो पृथ्वी पर साक्षी देते हैं, आत्मा, जल और रक्त और ये तीन एकमत हैं।"

पवित्र बाइबिल १ जान ५:७-८

यहां "शब्द" से तात्पर्य ईसा से है। स्पष्टीकरण प्रस्तुत है—

"आदि में शब्द था, शब्द परमेश्वर के साथ था और शब्द परमेश्वर था। वह आदि में परमेश्वर के साथ था।..."

"शब्द देहधारी हुआ और उसने हमारे मध्य निवास किया। हमने उसकी ऐसी महिमा देखी और पिता के इकलौते पुत्र की महिमा, जो अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण है।"

यूहन्ना १:१-२,१४

क्योंकि पिता अर्थात् परमेश्वर, उसकी पवित्र आत्मा और उसका इकलौता पुत्र, इन तीनों को एक कहना आध्यात्मिक दृष्टि से भले ही अच्छा लगता हो, पर सामान्य बुद्धि लगाने पर भी स्वीकार करने में ठीक नहीं लगता|अतः (१ जान ५:७-८) के उपरोक्त उद्धरण को

बाइबिल के अन्य संस्करणों-नये अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण-में निम्नानुसार परिवर्तित किया गया।

''क्योंकि तीन हैं जो साक्षी होते हैं-आत्मा, जल और रक्त और तीनों एकमत हैं।''

दि बाइबिल १ जान ५:७-८

स्वर्ग निकल गया। पिता, पवित्र आत्मा और पुत्र की जगह आत्मा, जल और रक्त आ गये। जल और रक्त भी कुछ मत रखते हैं क्या? या रख सकते हैं क्या? पर यहां रखते हैं। और वह एकमत क्या है? कहीं स्पष्ट नहीं।

हिन्दी बाइबिल में भी परिवर्तन किया गया देखिये-

''इस प्रकार तीन साक्षी हैं-आत्मा, जल और रक्त और ये तीनों एक ही बात कहते हैं।''

बाइबिल १ यूहन्ना ५:७-८

यहां विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है पहले मूल बाइबिल में स्वर्ग में तीन अलग थे और पृथ्वी पर तीन अलग। स्वर्ग में पिता, शब्द और पवित्र आत्मा। तथा पृथ्वी पर आत्मा, जल, और रक्त। इस प्रकार कुल छः थे। पृथ्वी पर यह आत्मा किसका था स्पष्ट नहीं। अब परिवर्तित अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण में और हिन्दी में तीन ही रखे। आत्मा, जल और रक्त और वे भी स्वर्ग में साक्षी देते हैं या पृथ्वी पर, स्पष्ट नहीं। यह भी विचारणीय है कि यह पवित्र आत्मा क्या है? और कहां से आया। पुराने नियम-उत्पति १:२ में तो केवल परमेश्वर का आत्मा है। और परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर में ही रहेगा, अन्यथा परमेश्वर मृत होगा और आत्मा का स्वतन्त्र अस्तित्व होगा, यदि परमेश्वर से परमेश्वर की आत्मा की सत्ता अलग मान ली जाय।

यद्यपि भजन संहिता ५१:११ में पवित्र, आत्मा शब्द है, पर वहां तो व्यक्ति की आत्मा को पवित्र विशेषण देकर कहा गया है। शब्द देखिये-

''मुझे अपनी उपस्थिति से दूर न कर,
तू अपना पवित्र आत्मा मुझसे वापस न ले।''

भजन संहिता ५१:११

परमेश्वर से अलग, परमेश्वर के बराबर एक स्वतन्त्र अस्तित्व

वाली पवित्र आत्मा नए नियम में ही है।

पवित्रात्मा–

जैसा कि सामान्य परिवर्तनों में होता है, कहीं कुछ गड़बड़ियां रह ही जाती हैं और इसी प्रकार यद्यपि १ यूहन्ना ५:७-८ में ईसाईयत की त्रिमूर्ति को सही करने का प्रयास किया गया और स्वर्ग की त्रिमूर्ति पिता, शब्द और पवित्र आत्मा को निकाल दिया, पर एक अन्य स्थान पर वह त्रिमूर्ति वैसी ही रही।

> **''इसलिए जाओ और सब लोगों को मेरा शिष्य बनाओ। उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।''**
>
> *मत्ती २८:१९*

अब बाइबिल के परिवर्तन करने वाले निश्चय करें कि वे ठीक हैं या ईसा मसीह। और परमेश्वर से अलग यह पवित्र आत्मा क्या है?

ईसा मसीह परमेश्वर के इकलौते पुत्र–

इस विषय पर विचार करने के पहले हमें यह स्पष्ट रूप से ध्यान में रखना चाहिये कि हम सभी-मानव मात्र-परमेश्वर के समान पुत्र हैं। कोई छोटा या बड़ा नहीं। और कोई विशेषाधिकार प्राप्त इकलौता नहीं।

पर बाइबिल और ईसाई जगत ईसा को परमेश्वर का इकलौता पुत्र मानते और प्रचारित करते हैं। इसके सम्बन्ध में बाइबिल का बहुप्रचारित वाक्य निम्नानुसार है–

> ***''क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकमात्र पैदा किया हुआ पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे नष्ट नहीं होगा, परन्तु शाश्वत जीवन पाएगा।''***
>
> *किंग जेम्स-होली बाइबिल, जॉन ३:१६*

यहां ''पैदा किया हुआ'' शब्द विशेष है। यहां जो अंग्रेजी शब्द है उसका अर्थ होता है जहां कर्ता सक्रिय होकर कुछ करे। अर्थात् शारीरिक रूप से पैदा किया हुआ पुत्र। क्योंकि यह शब्द ईसाई प्रचारकों को असमंजस की स्थिति में डालने वाला था, अतः नए अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण से यह शब्द निकाल दिया गया।

> ***''क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकमात्र पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे***

नष्ट नहीं हो, वरन् शाश्वत जीवन पाए।"

दि बाइबिल, जॉन ३:१६ (नया अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण)

और यही स्थिति हिन्दी बाइबिल में भी है।

"परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया कि जो मनुष्य उसके पुत्र पर विश्वास करेगा वह नष्ट नहीं होगा, परन्तु शाश्वत जीवन पाएगा।"

हिन्दी बाइबिल-यूहन्ना ३:१६

इस प्रकार ईसाई जगत स्वयं ने ईसा को "ईश्वर द्वारा पैदा किया हुआ पुत्र" कहना बन्द कर दिया।

आइये अब देखें कि क्या ईसा परमेश्वर के इकलौते पुत्र हैं।

यदि ईसा इकलौते हैं तो आदम की क्या स्थिति है? ईसा की अपेक्षा आदम की तो यह विशेषता है कि आदम को परमेश्वर ने स्वयं बिना किसी स्त्री की सहायता के बनाया जबकि ईसा के लिये ईसा की माता की सहायता लेना पड़ी। आदम की रचना देखिये–

"अतः परमेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा।..."

"तब प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से गढ़ा तथा उसके नथुनों में जीवन का श्वास फूंका। मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया।"

उत्पति १:२७; २:७

जब आदम को परमेश्वर ने स्वयं बनाया तो आदम ईश्वर का पुत्र क्यों नहीं माना जायगा? यही नहीं, बाइबिल स्वयं आदम को परमेश्वर का पुत्र मानती है।

"वह एनोश का, वह शेत का, वह आदम का, और वह परमेश्वर का पुत्र था।"

लूका ३:३८

अब आदम के परमेश्वर का पुत्र होने में क्या किसी को शंका या विवाद हो सकता है। इस प्रकार आदम और ईसा, परमेश्वर के दो पुत्र तो हो ही गये। और ईसा एकमात्र इकलौते नहीं रहे।

अब शैतान भी तो परमेश्वर का ही पुत्र है। क्योंकि उसे भी परमेश्वर ने ही बनाया है।

"उन सब जीव-जन्तुओं में, जिन्हें प्रभु-परमेश्वर ने रचा था, सबसे अधिक धूर्त्त सांप था।"

उत्पति ३:१

हां, यह बात अवश्य है कि ईसाई मान्यता के अनुसार शैतान परमेश्वर का सुयोग्य या प्रिय पुत्र नहीं था। हालांकि हम यह पहले ही बता चुके हैं कि शैतान परमेश्वर के प्रतिद्वन्द्वी, विरोधी, और कभी-कभी तो सहायक के रूप में भी काम करता है। हम यह भी बता चुके हैं कि सांप व शैतान एक ही हैं।

इस प्रकार अब तक ईश्वर के–तीन पुत्र हो गये।

परन्तु परमेश्वर के तो और भी पुत्र हैं–

प्रमाण प्रस्तुत है–

"तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों की पुत्रियों को देखा कि वे सुन्दर हैं और उन्होंने जिनको चुना उन सबको पत्नी बना लिया...।"

जब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों की पुत्रियों से सम्बन्ध किया, और उन्हें उनसे सन्तानें हुई जो शक्तिशाली और सुप्रसिद्ध वीर थे।

किंग जेम्स-पवित्र बाइबिल उत्पति ६:२,४

"अब एक दिन परमेश्वर के पुत्र प्रभु के सम्मुख उपस्थित हुए ...।"

एक दिन फिर परमेश्वर के पुत्र प्रभु के सम्मुख उपस्थित हुए।

किंग जेम्स-पवित्र बाइबिल जॉब १:६, २:१

...मैं चार व्यक्तियों को देखता हूं....और चौथे व्यक्ति की आकृति परमेश्वर के पुत्र के समान है।

किंग जेम्स-पवित्र बाइबिल, डेनिएल ३:२५

अब यदि ईसा ही परमेश्वर के पुत्र हैं तो उत्पति, अय्यूब (जॉब) और दानिएल (डेनिएल) में वर्णित ये उपरोक्त परमेश्वर पुत्र कौन है? वे किस प्रकार पैदा हुए, कितने थे, और कहां गये, कुछ स्पष्ट नहीं।

यह संकट की स्थिति बाइबिल के सम्पादकों व प्रकाशकों के भी

ध्यान में आई इसलिये बाइबिल के नये अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण में जॉब/अय्यूब १:६ व २:१ में ''पुत्रों'' की जगह ''देवदूत'' कर दिया। और डेनिएल/दानिएल ३:२५ में ''परमेश्वर के पुत्र'' के स्थान पर ''परमेश्वरों के एक पुत्र'' कर दिया। हम पहले ही कह चुके हैं कि परिवर्तन में गलतियों की संभावना विशेष रहती है। इस परिवर्तन में डेनिएल में उन्होंने भयंकर गलती कर दी। ''एक परमेश्वर के पुत्र'' के स्थान पर ''परमेश्वरों के एक पुत्र'' ''अनेक व्यक्तियों का एक पुत्र'' कहकर वे क्या कह रहे हैं, शायद इसकी उन्हें कल्पना भी नहीं है। इतना परिवर्तन करने पर भी उत्पति-६:२,४ में स्थिति वही रही।

हिन्दी अनुवाद में स्थिति थोड़ी और बदली। देखिये-

''तब ईश-पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा कि वे सुन्दर हैं...।''

''जब ईश पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों से सहवास किया...''

उत्पति ६:२,४

यहां पहला परिवर्तन तो यह किया कि मूल अंग्रेजी के ''मनुष्यों'' के स्थान पर यहां केवल ''मनुष्य'' लिखा। वैसे एक व्यक्ति के अनेक पुत्रियां हो सकती हैं, पर यहां इस परिवर्तन का कारण समझ में नहीं आया, कारण उस समय तक आदम का परिवार बढ़ चुका होगा और सुन्दर पुत्रियां एक ही परिवार में होना आवश्यक नहीं। पृथ्वी पर उस समय अनेक परिवारों में अच्छी पुत्रियां होंगी।

दूसरा परिवर्तन यह किया कि ''परमेश्वर के पुत्रों'' के स्थान पर 'ईश-पुत्र' लिखा। हालांकि सामान्य पाठक के लिये यह कोई बड़ी बात नहीं है, पर वास्तव में भोले हिन्दुओं को फंसाने की चाल है। कारण बाइबिल में ''ईश'' नाम की कोई सत्ता नहीं है। अतः अनुवाद में परमेश्वर के पर्याय में 'ईश' भी दे दिया और ईसा परमेश्वर के इकलौते पुत्र भी बने रहे। कारण बाइबिल में ईसा को 'ईश-पुत्र' नहीं वरन् 'परमेश्वर के पुत्र' ही कहा जाता है। 'ईश पुत्र' से वे क्या कहना चाहते हैं? 'ईश पुत्र' और 'परमेश्वर पुत्र' में अन्तर क्या है? कहीं स्पष्ट नहीं है।

दानिएल ३:२५ के हिन्दी अनुवाद में भी ''ईश पुत्र'' शब्दों का प्रयोग किया गया है।

अय्यूब की पुस्तक में अनुवादक एक कदम और आगे बढ़ गये।

वहां देखिये–

"एक दिन देवता-गण परमेश्वर के दरबार में उपस्थित हुए...
एक दिन फिर देवता-गण प्रभु के दरबार में उपस्थित हुए।"

अय्यूब १:६, २:१

अब यह 'देवतागण' क्या बला है? "परमेश्वर के पुत्र" की संकटमय स्थिति से बच निकलने के प्रयास में भारतीय मानस, जो मूलतः हिन्दू होता है, को प्रभावित कर फंसाने की चाल है। हिन्दू लोग 'देवता' शब्द और उनकी स्थिति से भली-भांति परिचित होते हैं और देवताओं के ब्रह्मा, विष्णु, महेश से सम्वाद से भी परिचित रहते हैं। अतः यहां हिन्दू पाठकों को देवतागणों का प्रभु के दरबार में उपस्थित होने में अटपटा नहीं लगेगा। पर ईसाई मत में, बाइबिल में तो 'देवता' होते ही नहीं, फिर ये देवता कहां से आ गए? वहां तो केवल 'देवदूत' होते हैं और उनका काम परमेश्वर का निर्दिष्ट काम करना होता है। जबकि देवता का हिन्दू धर्म में स्वतन्त्र कार्य प्रभार होता है। जैसे–वायु देव, अग्नि देव, वरुण देव आदि, तो फिर बाइबिल में देवता लिखने में धोका देने का उद्देश्य है।

इस प्रकार ईसा परमेश्वर के इकलौते पुत्र नहीं थे। बाइबिल के अनुसार भी परमेश्वर के अनेक पुत्र थे। और हमारे अनुसार विश्व के सभी प्राणधारी, परमेश्वर के पुत्र-पुत्रियां हैं। ❑❑❑